गांधी जी हिन्दुओं के लिए पूजनीय कैसे?

बेहद आश्चर्य और खेद का विषय है कि मोहनदास कर्मचन्द गांधी (महात्मा गांधी) हिन्दुओं के लिए पूजनीय बने हुए हैं। उन्हें तो मुसलमानों के लिए पूजनीय होना चाहिए था। वे तो मुसलमानों को खुश करने के लिए हमेशा हिन्दू हितों को कुर्बान करते रहे हैं। वे सारी उमर हिन्दुओं को मुसलमानों के हाथों पिटवाते और मरवाते रहे हैं तथा हिन्दुओं को कायर और कमजोर बनाते रहे हैं। इसी विषय की पुष्टि में यहां कुछ घटनाएं दी जा रही हैं।

1. 6 अप्रैल 1947 को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी का भाषण - बेशक मुसलमान हिन्दुओं को समाप्त करना चाहें तो भी हिन्दुओं को मुसलमानों के प्रति अपने दिलों में कोई गुस्सा नहीं रखना चाहिए। अगर मुसलमान हम सभी को मार देना चाहें हमें बहादुरी से मौत का सामना करना चाहिए। अगर हिन्दुओं को मार कर वे अपना राज्य स्थापित करना चाहें हम अपनी जिन्दगियां कुर्बान करके नई दुनिया में एक रास्ता दिखाएंगे।

2. 24 जुलाई 1947 को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी का भाषण - बेशक मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन का दो बार अध्यक्ष रह चुका हूँ, मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि देवनागरी लिपि में हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा कभी नहीं बन सकती।

3. जो लोग अपनी जान बचाकर पाकिस्तान से भारत आए थे उन्होंने गांधी जी से सवाल किया था। उसके उत्तर में 23 सितम्बर 1947 को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी ने कहा था - उन्होंने मेरे से पूछा कि जो हिन्दू पाकिस्तन में हैं उनके लिए हमें क्या करना चाहिए। बल्कि उलटा मैंने उनसे पूछा वहां पर मर जाने की बजाए वे भारत में क्यों आए। मेरा यह पक्का विश्वास है कि अत्याचार होते हुए भी हम जहां पर हैं वहीं पर रहें और मर जाएं। अगर लोग हमें मारने आते हैं, तो हम मर जाएं, पर ईश्वर का नाम लेते हुए हौसले से मरें।

4. जब अक्तूबर 1947 में पाकिस्तानी सेना की सहायता से कबायलियों ने कश्मीर पर हमला कर दिया था उस समय की स्थिति पर 31 अक्तूबर 1947 को दिल्ली में प्रार्थना सभा में गांधी जी का भाषण - कश्मीरी लोग आक्रमणकारियों को बता दें कि वे अपने घरों को वापिस जाएं। अगर वे हमला करते हैं तो उन्हें कश्मीरियों के शवों पर चलना होगा। वे श्रीनगर को इतना आसानी से नहीं जीत सकते। तब वहां पर हमारे सैनिकों को कोई कुछ न कहेगा। अगर हमारे सैनिक मर जाते हैं, वे अमर हो जाएंगे। तब हम खुशी से नाच सकते हैं और गा सकते हैं।

5. हिन्दुओं का अहित न चाहने वाले हिन्दू नेताओं के प्रति 29 मई 1924 के 'यंग इंडिया' पत्रिका में गांधी जी ने अपने विचार लिखे - मुझे पण्डित मदनमोहन मालवीय जी से सावधान किया गया है। सन्देह है कि उनके कोई गुप्त इरादे हैं। कहा जाता है कि वे मुसलमानों के मित्र नहीं हैं। ..... दूसरा व्यक्ति जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता वह है लाला लाजपत राय। ..... स्वामी श्रद्धानंद पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता।

6. 29 मई 1924 की 'यंग इंडिया' पत्रिका में गांधी जी लिखते हैं - मैंने आर्य समाज की बाईबल 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़ा है। ..... इतने बड़े सुधारक (महर्षि दयानन्द) द्वारा लिखी इससे अधिक निराशाजनक पुस्तक मैंने नहीं पढ़ी।

   नोट - गांधी जी सत्यार्थप्रकाश को निराशाजनक पुस्तक बताते हैं। जबकि वीर सावरकर ने सत्यार्थप्रकाश के बारे में कहा है ''हिन्दुओं की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की मौजूदगी में कोई भी विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।''

सत्यार्थप्रकाश ने हिन्दुओं में आत्म गौरव की भावना को जागृत किया है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ही रामप्रसाद बिस्मिल जैसे हजारों नौजवान स्वतन्त्रता संग्राम में कूदे। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ही आर्यसमाज ने स्त्रीशिक्षा, अछूतोद्धार, जातपात मुक्त समाज, विधवा विवाह आदि समाज सुधार के बहुत से काम किए, बाल विवाह, सतीप्रथा, पाखण्ड, अन्धविश्वास को समाप्त करने का प्रयास किया। देश का सरकार के बाद सबसे बड़ा शिक्षा संस्थान दयानन्द ऐंग्लो वैदिक (D.A.V.) सत्यार्थप्रकाश की ही देन है।

7. मोपला हत्याकाण्ड - केरल प्रान्त में मालावर जिले में मोपला मुसलमान बहुसंख्यक थे। मुसलमानों ने अंग्रेजों के विरुद्ध खिलाफत आन्दोलन चला रखा था। मुसलमानों ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं से कहा कि वे भी अंग्रेजों के खिलाफ खुलमखुला विद्रोह करें। हिन्दू तैयार न हुए। तब मोपलें ने कहा - अंग्रेजों से बाद में सुलटेंगे पहले तुम्हें सीधा कर दें। अगस्त 1921 में वहां पर बर्बर मोपलों ने हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा, महिलाओं का अपहरण किया, सामूहिक बलात्कार किए, हिन्दू परिवारों को जिन्दा जलाया, हजारों को बलपूर्वक मुसलमान बनाया। सैंकड़ों हिन्दू नारियों ने बर्बर मोपलों के बलात्कार से बचने के लिए कुओं में कूद कर प्राण दिए।

   गांधी जी और उनके चेलों ने इस काण्ड को जनता से छिपाने की बहुत कोशिशें की, परन्तु ये घटनाएं जग जाहिर हो गई। बर्बर मोपलों की निन्दा करने की बजाए गांधी जी ने उन्हें खुदा के बहादुर बन्दे कहा क्योंकि वे अपने मजहब के लिए अत्याचार कर रहे थे। परन्तु आर्य समाज ने जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं को वापिस हिन्दू बनाया और अंग्रेज सरकार ने गुण्डों को यथोचित दण्ड दिया।

   गांधी जी हिन्दुओं पर होते अत्याचारों को छुपाते रहे और मुसलमानों को उत्तेजित कर हिन्दुओं की हत्याएं करवाते रहे।

8. स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान - उत्तर प्रदेश के आगरा क्षेत्र में ऐसे लाखों राजपूत रहते थे जिन्हें औरंगजेब के अत्याचारी शासन काल में जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया था। ये मलकाने राजपूत कहलाते थे। ये कहने को तो मुसलमान थे, परन्तु इनका रहन-सहन, रीति-रिवाज सब हिन्दुओं के ही थे। जरा से प्रोत्साहन से वे सब हिन्दू बनने को तैयार हो गए। यह सन 1921-1922 की बात है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की अगुवाई में आर्य समाज ने उनकी शुद्धि का काम शुरु कर दिया। कांग्रेसी मुसलमानों ने ऐतराज किया। तो गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी को शुद्धि के कार्य से अलग होने को कहा। स्वामी जी आर्य समाज के बड़े नेता थे, साथ ही कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य थे। स्वामी जी ने कांग्रेस कार्यकारिणी से सम्बन्ध तोड़ लिया। शुद्धि का काम तेजी से चला और साठ हजार के लगभग मलकाने आर्य बन गए। गांधी जी ने शुद्धि आन्दोलन की भर्त्सना की। आर्य नेताओं को मुसलमानों की ओर से धमकियां आने लगीं। 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रशीद नाम के एक मुसलमान ने स्वामी जी को गोलियों से मार दिया। अंग्रेज सरकार ने खूनी को 14 नवम्बर 1927 को फांसी दे दी। पर गांधी जी ने हत्यारे को अपना भाई कहा और उसे निर्दोष बताया।

   26 दिसम्बर 1926 को गुवाहाटी में कांग्रेस की मीटिंग में गांधी जी ने कहा - स्वामी श्रद्धानंद जी को मारने वाले अब्दुल रशीद को मैंने भाई कहा। मैं उसको स्वामी जी के कत्ल का दोशी भी नहीं मानता। 30 दिसम्बर 1926 के 'यंग इंडिया' पत्र में गांधी जी ने लिखा कि मैं अब्दुल रशीद की वकालत करना चाहता हूँ।

9. महाशय राजपाल का कत्ल - मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें 'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी' और 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' प्रकाशित हुईं। पहली पुस्तक में योगेश्वर श्री कृष्ण पर भद्दे एवं अश्लील आरोप किए गए थे और दूसरी में महर्षि दयानंद पर। इन पुस्तकों के प्रत्युत्तर में महाशय राजपाल ने एक छोटी सी पुस्तक 'रंगीला रसूल' उर्दू में प्रकाशित की जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद

की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में दी गई थी। परन्तु घटनाएं सभी इतिहास-सम्मत और प्रामाणिक थीं। महाशय राजपाल लाहौर में बड़े पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता थे।

रंगीला रसूल' पुस्तक का प्रकाशन सन 1923 में हुआ था। एक वर्ष तक सारे पंजाब में पुस्तक बिकती रही। इस पर किसी ने आपत्ति नहीं की। फिर किसी ने इस पुस्तक की एक प्रति गांधी जी को पहुँचा दी। गांधी जी ने अपने अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र 'यंग इंडिया' में 24 मई 1924 के अंक में इस पर एक उत्तेजक टिप्पणी लिखी जिसका शीर्षक था 'आग भड़काने वाली पुस्तक' और उसमें मुसलमानों को उकसाने वाले ये शब्द भी लिखे ''स्थानीय नेताओं को चाहिए कि वे इसका प्रकाशन बन्द कराने या इसे निन्दित ठहराने का उपाय खोज निकालें।'' इसके बाद भी गांधी जी ने 'यंग इंडिया' पत्र के अन्य कई अंकों में 'रंगीला रसूल' पुस्तक के विरुद्ध भड़काने वाली टिप्पणियां लिखीं। परिणाम स्वरूप मुसलमानों ने महाशय राजपाल पर आक्रमण करने शुरु कर दिए। अन्त में 6 अप्रैल 1929 को इलमदीन नाम के मुसलमान ने छुरा घोंपकर उन्हें कत्ल कर दिया।

सारे देश में महाशय राजपाल 'धर्मवीर और हुतात्मा' के रूप में कीर्तिमान होने लगे। उनके बलिदान से हिन्दू समाज में एक नई जागृति की लहर दौड़ पड़ी। परन्तु गांधी जी इस कीर्ति को सह न सके। गांधी जी ने 18 अप्रैल 1929 के 'यंग इंडिया' में लिखा - 'राजपाल की हत्या ने उसे शहीद बना दिया है और उन्हें वह कीर्ति प्राप्त हो गई जिसके वे योग्य नहीं थे।'

मुहम्मद अली जिन्ना ने वकील के तौर पर तथा मुहम्मद इकबाल आदि बड़े मुसलमान नेताओं ने इलमदीन को निर्दोष साबित करने की पूरी कोशिश की। परन्तु अंग्रेज सरकार ने उसे दोषी मानकर 31 अक्तूबर 1929 को फांसी दे दी। मुसलमानों ने इलमदीन को सम्मानित कर उसे 'गाजी' की पदवी दी। पाकिस्तान बनने के बाद 'गाजी इलमदीन' नाम से फिल्म बनाई गई। उसे पाकिस्तान सरकार ने मनोरंजन कर से मुक्त कर दिया। वह पाकिस्तान में सिनेमा घरों में तथा टीवी पर अनेक बार दिखाई गई।

10. 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने DIRECT ACTION अर्थात 'सीधी कार्यवाई' करने की घोषणा की। यह घोषणा पाकिस्तान बनाने के लिए दबाव डालने के लिए थी। इसका गुप्त एजण्डा हिन्दुओं पर अत्याचार करने का था। बंगाल में मियां हसन शहीद सुहरावर्दी मुख्यमंत्री था। उसके संरक्षण में कलकता और नोआखली में हिन्दुओं पर मुसलमानों ने अथाह अत्याचार किए। मुस्लिम लीग के नाम पर हजारों मुसलमानों की विशाल सभा होती। भाषणों में हिन्दुओं पर अत्याचार करने की योजनाएं बनाई जातीं। सभा सम्पन्न होने पर हजारों मुसलमान भूखे भेड़ियों की भान्ति हिन्दुओं पर टूट पड़ते। दस हजार से अधिक हिन्दू मारे गए और पन्द्रह हजार से अधिक जख्मी हुए।

गांधी जी ने इस हत्याकांड की निन्दा तक नहीं की अपितु सुहरावर्दी को कलीन चिट दे दी। बंगाल में हिन्दुओं की हत्याओं के विरोध में बिहार के हिन्दू बहुल क्षेत्रों में प्रतिकार होने लगा। तब गांधी जी और उनके चेलें कांग्रेसी हिन्दुओं को धमकाने चले गए।

11. विभाजन का रक्तपात - मुहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि भावनाएं बहुत भड़की हुई हैं। इसलिए पहले आबादी की अदला बदली कर ली जाए। बाद में सेना और पुलिस का बंटवारा किया जाए, नहीं तो अत्यधिक रक्तपात होगा। यही सुझाव डा. अम्बेडकर तथा सरदार पटेल ने दिया था। परन्तु गांधी जी और नेहरू जी न माने। इसलिए सारा रक्तपात इनके सिर पर है।

12. 16 अगस्त 1946 की मुस्लिम लीग की DIRECT ACTION (सीधी कार्रवाई) की घोषणा के परिणाम स्वरूप बंगाल में कलकत्ता और नोआखली में फिर पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं का कत्लेआम तथा लूटपाट शुरू हो गई थी। इसको देखते हुए कुछ अंग्रेज सेनापतियों ने सलाह दी थी कि पाकिस्तान क्षेत्र से सभी हिन्दुओं को भारतीय क्षेत्र में ले आने के बाद ही सेना का विभाजन किया जाए। परन्तु नेहरू, गांधी न माने। उन्हें हिन्दुओं की हत्याओं की और हिन्दू स्त्रियों के अपहरण की बिल्कुल भी परवाह न थी।

13. पहले तो गांधी जी कहते रहे ''पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा'' फिर पाकिस्तान का बनना स्वीकार करने के बाद कहते रहे कि जो जहां हैं वहीं रहे। इस कारण से पाकिस्तान के बहुत से हिन्दू जो भारत नहीं आए मुसलमानों द्वारा कत्ल कर दिए गए। पाकिस्तान में मारे जाने वाले हिन्दुओं के प्रति गांधी जी ने कभी सहानुभूति नहीं दिखाई।

14. गांधी जी का हिन्दू विस्थापितों पर प्रहार - विभाजन के परिणाम स्वरूप पाकिस्तान में हिन्दुओं का नर संहार हुआ। प्रतिक्रिया स्वरूप भारत में भी मुसलमानों की कुछ हत्याएं हुईं। ऐसी स्थिति में 12 जनवरी 1948 को गांधी जी ने एक उपवास आरम्भ किया। उन्होंने धमकी दी कि वे आमरण उपवास रखेंगे यदि उनकी निम्नालिखित सात मांगें पूरी न की गईं।
    1. हिन्दू मुसलमानों पर आक्रमण बन्द कर दें।
    2. वे ऐसा वातावरण बनाएं कि एक भी मुसलमान असुरक्षा की भावना के कारण भारत न छोड़े।
    3. जो मुसलमान पहले ही भारत से पाकिस्तान चले गए हैं, उनको वापिस बुलाना चाहिए और उनके घरों मे पुनः स्थापित करना चाहिए।
    4. जो विस्थापित हिन्दू पाकिस्तान से भारत आ गए हैं और मुसलमानों के घरों में रह रहे हैं उनसे वे घर तुरन्त खाली करवाए जाएं तथा वे घर उन घरों के वास्तविक मुसलमान मालिकों को सौंप दिए जाएं।
    5. जो मस्जिदें चले गए मुसलमानों द्वारा छोड़ दी गई हैं तथा अब जिनमें विस्थापित हिन्दू रह रहे हैं उन्हें तुरन्त खाली करवाया जाए और सरकारी खर्च पर उनकी मुरम्मत करवाके मुसलमानों को सौंप दी जाएं।
    6. विभाजन के दंगों में मुसलमानों को हुई हानि का मुआवजा उन्हें दिया जाए।
    7. पाकिस्तान को रोकड़ बाकी का पचपन करोड़ रुपया दिया जाए।

हजारों विस्थापित हिन्दू जो अपने घरों, सम्पत्तियों, माल-असबाबों और परिवार के अनेक सदस्यों को पाकिस्तान में गंवाकर दिल्ली में आए थे और उन्होंने पाकिस्तान चले गए मुसलमानों द्वारा खाली की गई मस्जिदों में शरण ली थी, भारत की पुलिस ने उन असहाय हिन्दू शरणार्थियों को सन 1948 की जनवरी की कड़कती ठण्ड में बलपूर्वक घसीट-घसीट कर मस्जिदों से बाहर निकाला और खुलें आकाश के नीचे, सनसनाती बर्फीली हवाओं में गांधी जी की मांग पूरी करने के लिए सड़कों पर फेंक दिया। पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर रखा था ऐसी स्थिति में भी गांधी जी की मांग पूरी करने के लिए पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपए दिए गए।

****

सर रेजिनाल्ड क्रेंडक (SIR REGINALD CRADDOCK) अंग्रेजी सरकार में एक बड़े अफसर थे। वे बर्मा के गवर्नर तथा भारतीय शासकीय सुधार समिति के अध्यक्ष भी रह चुके थे। उन्होंने गांधी जी के सम्बन्ध में लिखा है ''यह पूर्ण सत्य है कि शरीर पर नाममात्र कपड़े पहनने वाले उस हिन्दू सन्यासी का उन्मादपूर्ण प्रभाव बुद्धिमान लोगों पर अधिक समय तक नहीं रहता था, परन्तु आज्ञानी और अन्धविश्वासी लोगों पर उसका भयावह प्रभाव होता है। (THE DILEMMA IN INDIA – लेखक सर रेजिनाल्ड क्रेंडक, प्रकाशित लन्दन में, पृष्ठ 115)

Reference:
I. Collected Works of Mahatma Gandhi by Gandhi Sevagram Ashram, Distt. Wardha.
II. Gandhi Heritage Portal, Young India.

लेखक : कृष्ण चन्द्र गर्ग
831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
दूरभाष : 0172-4010679